# स्त्री सशक्तिकरण के झरोखे से आपका बंटी

**डॉ. चंदना शर्मा**

**सहायक प्रोफेसर**

**हिंदी विभाग**

प्रागज्योतिष महाविद्यालय, गुवाहाटी, असम

**भूमिका :** स्त्री सशक्तिकरण के मायनेसमाज के विभिन्न वर्गों,व्यवसायिक एवंआर्थिक स्तरों से जुड़े व्यक्तियो की नजर में अलग-अलग हैं । एक ओर यह महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता का, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना है,तो दूसरी रूप में पुरुषों के समान स्थिति को प्राप्त करना । समग्ररूप से सशक्तिकरण व स्थिति है जब महिलाओके व्यक्तित्व के विकास , शिक्षा प्राप्ति ,व्यवसाय, परिवार में निर्णय लेने का समान अवसर मिले। जब वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो ,शारीरिक व भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें तथा तमाम रूढ़िवादी औरअप्रसांगिक रिवाजो-रूढ़ियों के बंधनों से पूरी तरह स्वतंत्र हो। यहां यह ध्यान देने की आवश्यकता है की स्त्री सशक्तिकरण का तात्पर्य यहा पुरुषों से बराबरी,प्रतिद्वंदिता या संघर्ष करने में नहीं है ;बल्कि प्रकृति प्रदत्त विभिन्नताओं को स्वीकार कर पूरे आत्मविश्वास से परिवार व समाज में सम्मानजनक स्थिति,आर्थिक आत्मनिर्भरता, सचेत रहकर समान अधिकार प्राप्त करने में है । यह केवल सैद्धांतिक रूप से नहीं बल्कि वास्तविक एवं व्यावहारिक रूप से भी साकार होना चाहिए।

**शोध विधि:** प्रस्तुत लेख की विषय वस्तु के अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाया गया है। तथा यह विषय समीक्षात्मक पद्धति की भी मांग रखता है।

**शोध सामग्री:**प्रस्तुत आलेख की शोध सामग्री विभिन्न प्रकार के लेखों और साहित्य के सर्वेक्षण की आधार पर प्राप्त किया गया है ।

**उद्देश्य :** इसशोधप्रबंध का उद्देश्य मन्नूभंडारी के उपन्यास आपका बंटीमें चित्रितस्त्री सशक्तिकरणको उजागर करना है।

**आपका बंटी उपन्यास में चित्रित स्त्री सशक्तिकरण:** आपका बंटी हिंदी साहित्य में एक मील का पत्थर है जो अपने समय से आगे की कहानी कहता है और हर समय का सच होने के कारण कालातीत भी है। शकुन के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी भी यही है कि वह व्यक्ति और मां के इस द्वंद्वमें वह ना पूरी तरह व्यक्ति बनाकर जी सकी,न पूरी तरह मां बनकर । अपने व्यक्तित्व को पूरी तरह नकारती हुई; अपने मातृत्व के लिए संबंधों के सारे नकारात्मक पक्षों को पीछे धकेलती हुई या उन्हें अनदेखा करती हुई, हिंदुस्तान की हजारों औरतों की यही त्रासदी है ।'आपका बंटी' में नारी के तीन रूप दर्शाये हैं । एक और वह स्वतंत्र व्यक्तित्व और आकांक्षाओं से युक्त सुशिक्षित एवं सुसभ्य नारी है तो दूसरी ओर ममतामयी माता भी, तीसरी और देखें तो प्रतिशोध के अग्नि में जलने वाली प्रतिकार की मूर्ति भी है । शकुन के व्यक्तित्व में यह तीनों रूप प्रतिफलितहोता है ।

बच्चे समाज का भविष्य होते हैं। बचपन अनमोल होता है। बच्चे की चिंता भविष्य की चिंता होती है । अगर बचपन ही हाशिए पर हो तो स्त्री-पुरुष संघर्ष के करणों के लिए चिंतित होना एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है । जाहिर है मन्नू भंडारी की चिंता में साहित्यकार के सामाजिक दायितव-बोध का ही ज्ञान है। स्त्री मुक्ति के मुद्दे पर उनकी दृष्टि इकहरी नहीं है, परिवार व समाज सापेक्ष है। नारी मुक्ति की अवधारणा व परिवार की अवधारणा में जो गहन अंतर विरोध है, साम्ंजस्यकी दिक्कतें हैं, उन्हीं की अभिव्यक्ति उपन्यास में बंटी के माध्यम से हुई है। माता-पिता के सहज संबंध न होने या अलगाव की स्थिति में बच्चे का कोमल मन प्रभावित होता है । तलाक विदेश में अधिक होते हैं पर स्वदेश भी इस समस्या से जूझ रहा है।

विवाह और प्रेम दोनों का स्वरूप उत्तर आधुनिक दौर में तेजी से बदल रहा है । विवाह पहले एक ऐसी चीज हुआ करती थी जिसमें बंध कर मर्द औरत बच्चे के लालन पालन के लिए सामाजिक आर्थिक इकाई का रूप लेते थे। बच्चों के लालन-पालन के बारे में समाज कुदरत कानून की दुहाई देकर यह कह रहा है कि स्त्री मातृत्व के लिए बनी है और बच्चे का पालन उसका ही काम है। लेकिन यह नहीं बता पा रहा है कि अगर ऐसा है तो क्या औरत घर में ही बैठी रहे मातृत्व के अलावा और कोई महत्वाकांक्षा ना पाले मन में । जब मर्द और औरत दोनों कमाते हो तब घर और बच्चों की सारी जिम्मेदारी औरत पर ही क्यों ?उसमें ही क्यों अपराध बोध जगाया जाए की चुड़ैल तू अपने बच्चों का ख्याल नहीं रखती। विवाहपुरुषों द्वारा स्त्रियों को गुलाम बनाए रखने वाले संस्था के रूप में नारी समाज में बदनाम हो रही है । उधर पुरुष वैसे ही सहज उपलब्ध यौन सुख की खातिर एक कलह-प्रिय स्त्री को घर में पाल लेने को मूर्खता कहने लगे हैं। दुसरीऔर प्यार के मामले में भी औरत अपना औरत होना छिपाना चाहती की कहीमर्द से कमजोर नस को पकड़ कर उसका भावात्मक शोषण न करें। शकुन भी अपनी महत्व को बढ़ाने के लिए घर से दूर बंटी को साथ लेकर कालेज में पढ़ाने चली आती है ।

इससे समस्या और बढ़ जाती है। अजय दूसरी औरत के साथ संसार बसा लेते है। और शकुन को तलाक के लिए ज़ोर देते है।

पारिवारिक अवधारणा बदली है । पति-पत्नी और संतान के सामूहिक कथा ही परिवार का पर्याय बना। फिर स्त्री-मुक्ति के सवालों और सह-अस्तित्व की दरकार से एकल परिवार भी टूटने लगा। अहममान्यता और वर्चस्वताबोध से ग्रसित पति के साथ पत्नी की तकरार शुरू होती है और उनके रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं । विवाह संस्था की इस मान्यता में गाथ पर जाता है कि पति पत्नी जीवन पर्यंत के साथी होते हैं।

सामाजिक पारिवारिक संरचना के कुछ बनावत ही ऐसी है कि स्त्री के आजादी का हर चरण उसे दंश भी देता है। सुकून के साथ भी ऐसा ही होता है। अजय उससे अलग रहकर मीरा से विवाह करता है। दोबारा एक बच्चे का बाप बनता है । उसके भीतर कोई खालीपन नहीं बनता। किंतु सुकून अजय से मुक्त होने पर परित्यक्ता होने की चुभन सहती है। अकेलेपन की पीड़ा सकती है। अकेलेपन की भावनात्मक आसूरक्षा के कारण ही वह हर रोज बंटी को कहानियां सुनाती है। 'राजा रानी की,परियों की, ऐसी राजकुमारी की जो अपनी मां को बहुत प्यार करते हैं और जो अपनी मां के लिए बड़े-बड़े समुद्र तैर गए थे और ऊंचे ऊंचे पहाड़ पार कर गए थे'(पृष्ठ संख्या14,आपका बंटी)। बंटी के लिए मम्मी ही सब कुछ होती है। पापा से तो वह साल-छः महीने पर ही मिलते हैं। उनसे गिफ्ट कि उसे लालसा होती है। लेकिन रात में उनके साथ नहीं रह सकता । मां के लिए रोने लगता है । लेकिन ऐसा बच्चा भी पीछे श्रीमती जोशी(शकुन) के लिए अनावश्यक प्रसंग या अनावश्यक तत्व बन जाता है । मम्मी पर एकल अधिकार जताने पर वह मम्मी की नई दुनिया का बाधा बन जाता है । गरिमा पूर्ण मातृत्व का पद खंड-खंड हो जाता है । इस नई समस्या को लेकर लेखिका चिंता ग्रस्त है स्वतंत्र व्यक्तित्व आकांक्षा और आजीविका के साधनों से तृप्त मां का क्या होगा । क्या सचमुच यह कहानी सोनम रानी कीभी है जो भूख लगने पर रूप बदलकर अपने बेटे को खा जाती है। (जन्म पत्री, पृष्ठ संख्या- 7आपका बंटी)

शकुन ऐसी औरत है जो आजादी का पाठपढ़कर घर की दलहीजलांघकर तो निकल पड़ी परंतु आजादी की नई राह की नई चुनौतियां आगे मिलने पर घबरा जाती है और ऐसे कंधे की तलाश करती है जो उसके बोझ को धो सके । परंतु प्रश्न यह है कि पति बदलने से उसका वजूद एक व्यक्ति का बना रहेगा। विवाह संस्था के भीतर या डॉक्टर जोशी उस पर अपना वर्चस्वकायम नहीं रखते । बंटी क्यों महसूस करता है की मम्मी डॉक्टर जोशी की उपस्थिति में सहमीसहमीसी रहती है? वस्तुतः सुकून का व्यक्तित्व परंपरा और आधुनिकता के द्वंदात्मक सूत्रों से गढ़ा गया है।

आपकी बंटी उपन्यास में व्यक्ति और परिवार के द्वंद्व और अंतर विरोध को उजागर किया गया है । परिवार

के द्वंद्व और अंतर विरोध को उजागर किया गया है । परिवार को बनाने और बनाए रखने के लिए छोटी बड़ी कई आकांक्षाओं की बलि देनी होती है । फिर अन्य संस्थाओं को जलाए रखने के लिए भी व्ययत्किकता का निषेध किया । जाता है सामाजिक प्राणी होने के नाते किसी भी संस्था में व्यवहारों में समंजस्यकी अपेक्षा की जाती है । वैवाहिक संस्था में बंधे पति-पत्नी के लिए भी है आवश्यक हो जाता है कि परस्पर सम्मान और सह अस्तित्व का भाव उन्हें स्वीकार्य हो। छोटी-छोटी बातों पर तूफान खड़ा नहीं किया जाए इसीलिए यथास्थिति वादी फूफी कहती है- अनबन किसमे नहीं होती? तो क्या ब्याही औरत को यूं छोड़ दिया जाता है और जब सुकून डॉक्टर जोशी से विवाह करने का निर्णय करती है तो वह कहती है-'जवानी यू आंधी नहीं होती है बहू ,फिर बुढ़ापे में उठी जवानी महा सत्यानाशी। साहब ने जो किया तो आपकी मिट्टी पलीत हुई और अब आप जो कर रही है उसे इस बच्चे की मिट्टी पलिद होगी"।(पृष्ठ संख्या-97आपका बंटी)

फूफी के रूप में परिवार को बनाए रखने वाली समाज के सभी नियमों का पालन करने वाली स्त्री का चित्रण हुआ है जो स्वतंत्र होकर भी सशक्त नहीं है। संभवत सामाजिक दुष्यंताओं से उबर जाने का ही एक रास्ता वह दिखती है। 'यह रास्ता परंपरागत ही नहीं, सर्वमान्य भी है । भविष्य को स्वस्थ और समुन्नत करने का एक आदर्शात्मक पहलू है।" (पृष्ठ संख्या-17;उत्तरशतीके उपन्यासों में स्त्री)लेखिका का सारा संकट परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व का है। व्यक्ति और परिवार के अंतर विरोध का है। उपन्यासकार नारीवादी सोच तथा परिवार और समाज पर उनके पड़ते प्रभाव और परिवर्तन का विश्लेषण करती है।

**निष्कर्ष:**उपन्यास में शकुन क्रियाबादी नहीं प्रतिक्रियावादी है । यह अंतर आंतरिक कमजोरी या आत्मविश्वास की कमी नहीं है । मुद्दा करियर का हो या पुनर्विवाह का मसलन 7 वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो जाने के पीछे भी कहीं अपने को बढ़ाने से ज्यादा अजय को गिराने की आकांक्षा ही थी । उसने स्वयं को कभी अपना लक्ष्यरखा ही नहीं एक। अदृश्य अंजान सी चुनौती थी जिसे शकुनने हर समय अपने सामने हवा में लटकता हुआ महसूस किया और जैसे उसका मुकाबला करते-करते उसे जूझते ही वह आगे बढ़ती चली गई थी । शकुन और अजय का कार्यक्षेत्र भी एक नहीं था। उनमें सहकर्मियों जैसी प्रतिद्वंद्विता और होड़ भी नहीं थी । फिर सुकून की यह प्रतियोगितामूलक मनोभाव अतिबौद्धिकताही इसका कारण हो सकता है।

**सहायक ग्रंथ सूची:**

1॰ भण्डारी,मन्नू;आपका बंटी; 2019; वाणी प्रकाशन;दिल्ली

2. त्रिपाठी, शशिकला;उत्तरशतीके उपन्यासों में स्त्री;2006; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

3. गुप्ता, रमणिका;स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास ; 2014 ; सामयिक प्रकाशन;न्यू दिल्ली